International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

मेरूखंड पद्धति एवं इंदौर घराना

डॉ. मधुलता

सार–संक्षेप

घराना रूपी उद्यान में 'इदौर' घराने का वृक्ष अपनी एक विलक्षण श्वास लेकर प्रकट हुआ। इस घराने की मेरूखण्ड गायिकी जहाँ संगीत के असीम सागर से हमारा परिचय कराती है, वहीं दूसरी ओर हमारे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित मूर्च्छना–पद्धति को साकार रूप में आधुनिक युग में जीवित बनाए रखती है। इस प्रकार इंदौर रूपी पुष्प का विभिन्न घरानों से सजे गुलदस्ते में एक अलग पहचान है।

उत्तर भारतीय संगीत के प्रमुख घरानों में इंदौर घराने का एक विशिष्ट स्थान है। इस घराने का सूत्रपात उ॰ अमीर खाँ साहब से प्रारंभ हुआ था।

अपनी गायिकी के संबंध में खाँ साहब स्वयं कहते थे "मैंने अपने समय के सब उस्तादों को सुना और समझने की कोशिश की और फिर अपनी राह निकाली।" अपनी दूरदर्शिता के बल पर उन्होंने उ॰ रजब अली खाँ से प्रेरित होकर छूट की तानों में आवाज़ की उछाल का तरीका अपनाया जिसमें अति तार सप्तक में भी तान उड़ान भरती है तो भी आवाज़ अंत तक अपनी धरती नहीं छोड़ती। उ॰ वहीद खाँ से प्रेरित होकर उन्होंने गायन को अति विलंबित किया एवं उ॰ अमान अली खाँ की मेरूखण्ड युक्त सरगम प्रणाली को विचित्रता उत्पन्न करते हुए प्रस्तुत किया। इस प्रकार उन्होंने अपना नया व निराला गायिकी का अंदाज विकसित किया, जिससे अमीर खाँ साहब एवं इंदौर एक पर्याय बन गये थे।

भूमिका

खाँ साहब की गायकी केवल बुजुर्गों से मिली विरासत ही नहीं थी अपितु उन्होंने अपनी गायकी की मेहनत से, अपनी कल्पना, बुद्धि व प्रतिभा से विचार–पूर्वक बनायी थी। आपकी गायकी एक शान्त–सौम्य, अविचल, धीर–गम्भीर प्रकृति की गायकी थी जो संगीत प्रेमियों को अस्थिर जीवन के भागदौड़ के क्षणों से कुछ विश्रांति देती थी।

खाँ साहब की आवाज़ में ओज, गाम्भीर्य एवं चैन था जो उनकी गायकी के लिए अनुकूल ही नहीं बल्कि उसको निखारने में भी सहायक था। अतः मारवा, मुल्तानी, दरबारी कान्हड़ा, शुद्धकल्याण, ललित जैसे राग जो उन्हें प्रिय थे, उनकी गायकी में खूब खिलते थे। वास्तव में उन्होंने अपनी गायन पद्धति स्वयं विकसित की थी। उनका धीर–गम्भीर, ओजपूर्ण गायन जिसमें आनन्द, तल्लीनता एवं समाधि की स्थिति थी। उनका विस्तार आलाप मेरूखंड पद्धति का अनुयायी था।

खाँ साहब के संबंध में डॉ. मुकेश गर्ग जी ने एक समीक्षा निम्न प्रकार से प्रस्तुत

किया है– "घरानेदार संगीत में नियमों और उसूलों की ऐसी जकड़बंदी है कि नया कर गुजरने की कोशिश करने वाले अच्छे–अच्छे कलाकारों की हिम्मत पस्त हो जाती है। फिर भी संगीत को नया जीवन देने वाले कलाकार हमेशा होते रहे हैं। उ. अमीर खाँ ऐसी ही शख्सियत थे। उन्होंने ख्याल–गायकी में गंभीर परिवर्तन किए। उसके पीछे खाँ साहब का गहरा चिंतन था। बड़े ख्याल की अति विलंबित लय वाली गायकी को प्रतिष्ठित करना, 'खंडमेरू' पलटों को एक सप्तक के स्थान पर दो सप्तकों में फैलाकर राग–प्रस्तुतीकरण में चमत्कार की सृष्टि करना, बंदिश से अधिक राग स्वरूप को उजागर करने में ध्यान लगाना, चैनदारी और स्वरों की गहराई पर आधारित गायकी विकसित करना, तराने में ख्याल–गायकी की खुशबू का समावेश करना इत्यादि उनकी कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं, जिनके कारण अमीर खाँ भुलाए नहीं जा सकेंगे। जीता–जागता घराना थे वह।[1]

1) शास्त्रों में मेरूखंड

मेरूखंड या खंडमेरू का उल्लेख सर्वप्रथम 13वीं शताब्दी में पं. शारंगदेव द्वरा रचित ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में मिलता है। मेरूखंड को विभिन्न नामों खंडमेरू, मेरखंड, मीरखंड, सुमेरूखंड आदि से जाना जाता है।

संगीत रत्नाकर में खंडमेरू के संबंध में इस प्रकार कहा गया है–

प्राक्पङ्क्त्यन्त्याङ्क संयोगमूर्ध्वाधः स्थितपङक्तिषु।
शून्यादधो लिखेदेकं तं चाधोऽधः स्वकोष्ठान्।।64।।
कोष्ठसङ्ख्यागुणं न्यस्येत्खण्डमेरूरचं मतः।[2]

अर्थात् पंक्तियों के अंतिम अंकों के योग को शून्य के नीचे लिखना चाहिए। इसके अनुसार पहले शून्य के नीचे पिछली पंक्ति का अंक एक (1) लिखना चाहिए और उस पिछली पंक्तियों के अंतिम अंकों के योग को अपने नीचे–नीचे के कोष्ठ से आरंभ करते हुए कोष्ठ की संख्या के गुणनफल को स्थापित करना चाहिए। यह खंडमेरू माना गया है।

स्वरों को नियमपूर्वक निश्चित क्रम में रखने की इस गणितीय विधि के द्वारा सप्तस्वरों का पाँच हजार चालीस विविध रूपों में संयोजन किया गया है। इस तरीके के अनुसार हर एक स्वर के भेद होते हैं। जिस संख्या के भेद चाहें, उस संख्या को उससे एक–एक कम होते हुए एक संख्या तक के सब अंकों से गुणा करने से वह सही मिलते हैं। जैसे 5 स्वरों के भेद इस प्रकार होंगे–

$$5\times4\times3\times2\times1=120$$

खाँ साहब की गायकी में अमीर खुसरो का प्रभाव –

उ. अमीर खाँ साहब ने तरानों पर बहुत खोज की थी, और उनका composition खुद किया था। उनका विचार था कि तराना एक सार्थक संरचना होती है, किन्तु कालांतर में उसके गूढ़ तथा रहस्यमय अर्थ अनपढ़ गायकों से लुप्त हो गए और उसे केवल निरर्थक

---

1. संगीत, जुलाई, 1988, 'सुर रंग' बनाम अमीर खाँ की याद में, समीक्षा/मुकेश गर्ग, पृ.सं.–54
2. संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय, व्याख्या एवं अनुवादकर्त्री–सुभद्रा चौधरी, पृ.सं.–128–129

ढांचा समझ लिया गया। वह तराना को जप मानते थे जिसे सूफी लोग 'हाल' की अवस्था में दुहराते थे। अमीर खुसरो द्वारा रचित तराने में बाद में कोई शेर अंतरे की जगह आता था। बाद में, गवैयों ने अंतरे में शेर की जगह पखावज के बोल भर दिए और तरानों के बोलों को अर्थहीन बना दिया। उ. अमीर खाँ साहब ने खुसरो की चलन को फिर से जिंदा किया।[3]

2) भिंडी बाजार घराने के उ. अमान अली खाँ साहब की गायकी में मेरूखंड–

उस्ताद अमान अली खाँ साहब भिंडी बाजार घराने के मशहूर गायक हुए हैं। भिंडी बाजार घराने के प्रतिनिधि कलाकार मूलरूप से बिजनौर, जिला मुरादाबाद के मूल निवासी थे। उ. अमान अली खाँ का जन्म 1884 ई. में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के अंतर्गत बिजनौर में हुआ था। उनके पिता उ. छज्जू खाँ एवं चाचा उ. नज़ीर खाँ, उ. खादिम हुसैन खाँ एवं उ. हाजी विलायत हुसैन खाँ मुंबई के भिंडी बाजार इलाके में आकर बस गए। इन कलाकारों के मशहूर होने के साथ ही यह भिंडी बाजार घराना प्रसिद्ध हुआ।

उ. अमीर खाँ साहब के पिता उ. शाहमीर खाँ साहब की तालीम उ. अमान अली खाँ के पिता छज्जू खाँ एवं चाचा नज़ीर खाँ से हुई थी। इस प्रकार उ. अमीर खाँ साहब को मुम्बई में उ. अमान अली खाँ साहब का सानिध्य प्राप्त हुआ।

भिंडी बाजार घराने की तानों के ढंग को 'खंडमेरू' कहते हैं। सरगम पद्धति इस घराने की गायकी का विशेष गुण है। एक बार जहाँ सरगम आरम्भ होती है, श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो घंटों सुनते रहते हैं। उनमें इतनी नई–नई प्रकृतियाँ बनती रहती हैं कि सुनने वाले एक पल भी तंग नहीं आते।[4]

उ. अमान अली खाँ की गायकी की अपनी अलग ही पहचान है। उनका अधिकांश जोर मध्यलय पर था और वह भी द्रुत की ओर झुकनेवाली ही थी। स्वर लगाने की उनकी पद्धति अत्यंत नाज़ुक थी, जिसमें एक प्रकार की मनोरम लचक और दुलराहट थी। इसलिए मध्यलय में उनकी चीज शुरू होते ही वह शुभांगी के नृत्य समान लगती। इस घराने के गायन सुनने पर ऐसा प्रतीत होता है मानों एक–एक स्वर विन्यास नृत्य का पदन्यास लगता है। उसकी शोभा, नजाकत, लचक, स्वरों के मोड़ और डोल यह सब नृत्य विलास की ही याद दिलाते हैं।[5]

उ. अमीर खाँ साहब के संबंध में विदुषी प्रभा अत्रे अपनी पुस्तक 'स्वरमयी' में उल्लेख करती हैं–

"आवाज़ लगाने के ढंग से लेकर एकदम अलग थी, जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। उनकी गायन शैली किराना घराने के निकट थी परन्तु उसकी तफ़सील एवं आविष्कार अलग था। तुलनात्मक दृष्टि से किराना घराने की गायकी मध्य एवं तार सप्तक की है, तो खाँ साहब की गायकी खर्ज की। खर्ज का इलाका कुल मिलाकर रूक्ष (सूखा) और

---

3. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना–परंपा, शम्भुनाथ मिश्र, पृ.सं.–140
4. ख़्याल गायकी में विविध घराने, डॉ. शन्नो खुराना, पृ.सं.–65
5. घरानेदार गायकी, वामनराव हरि देशपांडे, पृ.सं.–

उबड़–खाबड़, परन्तु खाँ साहब ने इस खर्ज को मख़मली हरियाली जैसा मुलायम बनाया। इसी कारण उनकी गायकी को 'त्रिमायामी' स्वरूप प्राप्त हुआ। भारदस्त, ख़ानदानी, गंभीर, आत्मशोधक, अंतर्मुख करने वाली–ऐसे कई विशेषण उनकी गायकी के साथ जोड़ सकते हैं। उनकी आवाज़ गंभीर थी, उसे एक गूढ़ता का स्पर्श था। प्रस्तुति में स्वाभाविक गुणों के साथ एक सोच थी।[6]

खाँ साहब पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ गई। उ. वहीद खाँ साहब विलम्बित गायन के लिए झूमरा ताल का प्रयोग करते थे जिसे उ. अमीर खाँ साहब ने भी अपने गायन विलम्बित ख्याल के लिए चूना। जब उ. अमीर खाँ साहब अपनी विचारशीलता का उपयोग कर उ. वहीद खाँ साहब की गायकी आत्मसात् कर चुके तो एक बार अब्दुल वहीद खाँ साहब ने अमीर खाँ साहब का गायन सुना और उसमें इतना अपनापन लगा कि उन्होंने अति प्रसन्न होकर कहा कि "मैं समझता था मेरे मरने के बाद मेरी गायकी भी खत्म हो जाएगी लेकिन अब मुझे यकीन है कि अमीर खाँ में मेरी गायकी की रोशनी जिन्दा रहेगी।"[7]

उ. अमीर खाँ साहब विलम्बित ख्याल की बढ़त में उ. वहीद खाँ साहब का पूरा अनुसरण करते। उनकी राग–व्याख्या भी किराना गायकी की बढ़त पर ही पूरी तरह निर्भर थी। उ. वहीद खाँ के शिष्य न भी बनकर वह उनके सबसे अधिक प्रतिभाशाली अनुयायी साबित हुए। इसे आज भी सभी स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार एक गायकी की हैसियत से उ. अमीर खाँ साहब ने किराना गायकी को अपने लिए अनुकूल बनाया और उसका थोड़ा–बहुत शोधन और परिष्कार भी किया।

अब्दुल वहीद खाँ साहब के शिष्य स्व. पंडित जीवन लाल भट्ट कहा करते थे कि अमीर खाँ ने उनके पूज्य गुरू की गायकी को और रौशन कर दिया।[8]

(ख) उस्ताद रज़ब अली का खाँ साहब के गायन में प्रभाव–

उ. रज़ब अली खाँ देवास के सुप्रसिद्ध दरबारी कलाकार थे। मैसूर के महाराजा श्री कृष्णराव वाडियार ने 1909 ई. में 'संगीत रत्न भूषण' की उपाधि प्रदान की। मुम्बई की म्यूजिकल आर्ट सोसाइटी ने उन्हें 'संगीत सम्राट' का खिताब प्रदान किया।

70 वर्ष की उम्र तक मध्य, मध्य द्रुत, द्रुत और अति द्रुत लय में तैयारी के साथ दानेदार फिरत दिखाना उनकी गायकी का आम चलन था। उन्हें मेरूखंड के टुकड़ों को लय खंडों में नए रूप देकर एक टुकड़ा कहीं का, दूसरा टुकड़ा कहीं का मिलाकर तैयारी के साथ पेश करने का जबर्दस्त अभ्यास था। यह लयकारी काफी पेचीदा थी। लय पर उन्हें इतना बढ़िया अधिकार था कि वह कहीं से भी मुखड़ा पकड़कर सम पर आ जाते थे।

उस्ताद रज़ब अली खाँ को करूण रस बहुत प्रिय था। वह कहा करते थे, करूण रस सभी रसों की आत्मा है। उनके गायन में श्रृंगार, वीर, रौद्र और शांत रस का आभास होता

---

6. स्वरमयी, डॉ. प्रभा अत्रे, हिंदी अनुवाद–नीलिमा छापेकर, पृ.सं.–28
7. संगीत के देदीप्यमान सूर्य–उ. अमीर खाँ, पं. तेजपाल सिंह एवं डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, पृ.सं.–34
8. हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न, डॉ. सुशील कुमार चौबे, पृ.सं.–265

था। वह कहा करते थे– "संगीत ऐसे दिल की खुशबू है, जो जलकर कबाब हो गया हो। घायल दिल की पुकार ही संगीत है।"[9]

उ. अमीर खाँ साहब के पिता उ. शाहमीर खाँ और उस्ताद रज़ब अली खाँ घनिष्ट मित्र हुआ करते थे। उ. अमीर खाँ साहब अपने पिता के साथ उ. रज़ब अली खाँ के घर अक्सर जाया करते और उनके समान बनने की कामना अपने भीतर रखते थे। इस प्रकार उ. अमीर खाँ साहब को उ. रज़ब अली बचपन से का सानिध्य प्राप्त होता रहा जिसके फलस्वरूप इनके मन पर उ. रज़ब अली खाँ के गायन की अमिट छाप अंकित हुई। उ. अमीर खाँ साहब ने उ. रज़ब अली से कई बंदिशें सीखीं। उ. रज़ब अली खाँ साहब ने उ. अमीर खाँ साहब के गायन के संबंध में एक संगीत सम्मेलन में गायन के दौरान कहा था– देखा! यहाँ तुम मेरी जवानी का गाना दोबारा सुन सकते हो।

जिस प्रकार कबीर के गुरू रामानंद थे उसी प्रकार उ. रज़ब अली खाँ गुरू न होते हुए भी उ. अमीर खाँ साहब के मन में माने गए गुरू समान ही थे तभी तो उ. अमीर खाँ साहब ने उनकी गायकी अपनाई। भले ही उ. रज़ब अली प्रत्यक्ष रूप में उनके गुरू न हों तथापि परोक्ष रूप से उन्होंने अमीर खाँ साहब के गायन को प्रभावित किया।[10]

(ग) उस्ताद अमान अली खाँ साहब का प्रभाव

उ. अमान अली खाँ साहब भिंडी बाजार घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार हुए, जो उ. अमीर खाँ साहब के लिए एक मुक्त हृदय से ज्ञान प्रदान करने वाले मार्गदर्शक माने जा सकते हैं। उन्होंने अपनी सरगम गायकी की तकनीक, लय की निराली समझ और अनेक स्वरचित खूबसूरत बंदिशों की निधी से उन्हें लाभान्वित किया।

उ. अमीर खाँ साहब के पिता की तालीम उ. छज्जू खाँ एवं नज़ीर खाँ से हुई जो उ. अमान अली खाँ के पिता एवं चचा थे। उ. अमीर खाँ साहब जब मुम्बई गए तो उन्होंने अमान अली खाँ साहब का सानिध्य प्राप्त किया। इस प्रकार वे अमान अली खाँ साहब को सुनते, उनकी गायन शैली को समझते और उनमें से कुछ तत्व स्वयं में ढालने का प्रयत्न भी करते। ऐसा करना उनके लिए सहज भी था क्योंकि इस शैली की झलक के अपने पिता की शैली में प्रारंभ से ही देखते आ रहे थे।

उ. अमान अली खाँ साहब की गायकी की अपनी अलग ही पहचान रही है। उनकी गायकी मध्यलय प्रधान थी। वे अति विलम्बित और अति द्रुत दोनों ही नहीं गाते थे। उ. अमान अली खाँ साहब को रागों की बहुत अच्छी समझ के साथ–साथ उनके गाने का अंदाज़ निराला था। उनके गायन की ख़ासियत उनके सरगम गायन में थी। अमान अली खाँ साहब ने जो सरगम प्रयोग किया उसके अंतर्गत स्वरों का विशिष्ट आघात सहित उच्चारण स्पष्टतया कर्नाटक संगीत से प्रेरित है। उनका स्वर लगाव अती मनोरम, नाजुक और लचकदार था।

---

9. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा, शम्भुनाथ मिश्र, पृ.सं.–137
10. संगीत के देदीप्यमान सूर्य–उ. अमीर खाँ, पं. तेजपाल सिंह एवं डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, पृ.सं.–28

अमान अली खाँ साहब ने कर्नाटक संगीत का काफी अध्ययन किया, फिर उसके सार तत्वों के सौन्दर्य को ग्रहण कर उत्तर–हिन्दुस्तानी–संगीत में अपनी अनोखी शैली प्रस्तुत की। फलस्वरूप कर्नाटक–संगीत–पद्धति के अनेक रागों में बंदिशों की रचना कर उन्हें उत्तर–हिन्दुस्तानी–हिन्दुस्तानी–संगीत में प्रस्तुत किया। जैसे–राग हंसध्वनि, प्रतापवराली इत्यादि। साहित्यिक दृष्टिकोण से इनकी रचनाएँ बहुत ही उच्च कोटि की है जिन्हें काफी प्रसिद्धि मिली। अपने पिता छज्जू खाँ का उपनाम 'अमरशाह' लेकर बहुत सारी खूबसूरत रचनाएँ की। जैसे–

राग – भैरव (एकताल)
स्थायी – अब काम कीजे भगवंत बलवंत दाता।
अंतरा – तू ही दीन तू दयाल दयानी, तू आकाश तू पाताल,
तू ही रूप जगतार 'अमर' गुन ग्यानी।

राग – हंसध्वनि (एकताल)
स्थायी – जय माते विलम्ब तज दे
मांगन गुन दे हो।
अंतरा – विधा गुन 'अमर' देवी
जननी जग की हो।

राग – हंसध्वनि (एकताल)
स्थायी – भज मन नित हरि को नाम
काहे मन सोच करे।
अंतरा – सतगुन के सदा संग है
अमर काहे तन रे।

राग – हंसध्वनि (तीनताल–द्रुतलय)
स्थायी – लागी लगन जति पति संग
परम सुख अति आनंदन।
अंतरा – आए नए मदन कामन सबन बन
अंग सुगंधन चंदन माथे तिलक धरे
दृगन नैन अंजन फबन पे
अमर हो नित पति काजे सदन।

उ. अमीर खाँ साहब उपरोक्त बंदिश को बहुत गाया करते थे। उ. अमीर खाँ साहब राग हंसध्वनि के संबंध में कहा करते थे कि यह कर्नाटक पद्धति का राग है और उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में इसका गायन इतना लुभावना प्रतीत हो रहा है कि दोनों पद्धतियों का मेल इस प्रकार स्थापित हो गया हो मानों दोनों एक ही हों। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उ. अमीर खाँ साहब गायन पर अमान अली खाँ साहब की गायन शैली व सोच का

काफी प्रभाव था।[11]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उ. अमीर खाँ साहब ने अपने समय के अनेक कलाकारों को सुना और मुक्तकंठ से उनकी सराहना करते हुए उन्हें जहाँ से जो अच्छा गुण मिला उसे अपने भीतर समाहित करते गए। इसके फलस्वरूप खाँ साहब के गायन का एक नया अंदाज बन गया।

[11]. संगीत के देदीप्यमान सूर्य–उ. अमीर खाँ, पं. तेजपाल सिंह एवं डॉ. प्रेरणा अरोड़ा, पृ.सं.–31

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM